B.A. (Part II) EXAMINATION, 2019

(For Non Collegiate)

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक एवं एकांकी

Time Allowed : Three Hours   Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) नहीं सौमू। जब मुझे ज्ञात हुआ कि वह माँ बनने वाली है तो कुल और कुटुम्ब के भय ने मुझे ग्रस लिया। नदी पर बढ़ती साँझ की तरह उस भय की तन्द्रा मेरी बुद्धि पर छा गई। और मैं भाग आया, सारिका और उसकी अजात संतान से दूर-बहुत-दूर भुवनेश्वर में देव-मन्दिर की छाया में-कला के आँचल में अपना मुँह छिपाने! (2+8)

अथवा

महामात्य ? जान पड़ता है बंग-देश में हमारी लम्बी अनुपस्थिति के दिनों में राजराज चालुक्य बिना सोचे-समझे शिल्पियों से विरक्त हो गए। हम उनका भ्रम दूर करेंगे। राजधानी लौटने पर शिल्पियों के कुटुम्बों को उनकी जमीन लौटाने की आज्ञा दी जाएगी। सामन्तों के लिए दूसरा प्रबन्ध किया जाएगा। (2+8)

(ख) आर्य, मेरी आँखों के सामने जो परदा पड़ा है उसे उठाइए नहीं। उस पर मेरी माँ की मधुर, गम्भीर दर्दभरी मूर्ति दीख रही है। .... और वहाँ मानो सूरज की अन्तिम किरणें पड़ रही हैं। किरणों के बीच माँ कैसी भली दीख पड़ती है। .... ये किरणें किधर से आती हैं आर्य ? आप जानते हैं ? (2+8)

अथवा

मुझे रोकने की चेष्टा न कीजिए, आर्य! मुझे संध्या की वे ही किरणें बुला रही हैं। लेकिन सुनिए! एक बार मन्दिर पर अधिकार कर लेने पर चालुक्य की शक्ति को कोई नहीं रोक सकता। महाराज नरसिंह देव की चेष्टाएँ विफल हो जाएँगी। सवेरे ही चालुक्य पुरी के लिए कूच कर देगा। और फिर उस अत्याचारी के आगे कोई नहीं ठहर सकेगा, कोई नहीं। (2+8)

(ग) बहुत अच्छा लगता है। जीव की सारी चिन्ताएँ छूट जाती हैं। मालूम होता होगा, जैसे किसी पानी भरने वाली ने घर पहुँचकर अपने सिर का घड़ा उतारकर नीचे धर दिया है। या जैसे पुरानी मन्दिर में पहुँच गया है। तभी तो इन आत्माओं से बात करने में अच्छा लगता है। हाँ, जो आत्महत्या करके मरता है, वह अपनी गति में पिछड़ जाता है और वह अपने सूक्ष्म संसार में एक पत्थर की तरह गिरता है। मैंने सूक्ष्म शरीरों से बात करके यह जान लिया है। (2+8)

http://www.uoronline.com
http://www.uoronline.com

http://www.uoronline.com

अथवा

बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया। मैं दूसरे का बोझ ढोता हूँ। मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं। मैं आईने में अपना मुँह देखता हूँ। मैं इन सब आईनों में अपना मुँह देखता हूँ। सूरज नहीं रहा। अब धरती पर आईनों का शासन होगा। आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग-अलग कर देंगे। (2+8)

(घ) तीन दिनों तक यही कमरा साहब के मेहमान की काली छाया से भरा हुआ था। अपने मित्र के साथ तुम्हारे साहब ने इसी कमरे में मेरी उस छोटी-सी घटना को अपने विकारों के आतशी शीशे में बढ़ाकर देखा था ...... चन्दू। इस तरह सिर दर्द कर रहा है कि चीखूँ इसी कमरे में! तोड़ दू इन दरवाजों को......। (2+8)

अथवा

कैसी बातें करते हो......मैं तो अपने को बहुत अच्छे नसीब वाली समझती हूँ। और क्या चाहिए किसी को ? लिहाज करने वाले बेटा-बहू हैं, लड़की अपनी गिरस्ती में मगन है, सिर पर तुम्हारा हाथ है। (2+8)

2. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'आवाज का नीलाम' एकांकी की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'नया-पुराना' एकांकी की मूल संवेदना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 15

3. 'ममता का विष' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करते हुए इसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'उत्सर्ग' एकांकी के नामकरण की सार्थकता एवं मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

4. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर 'कोणार्क' नाटक की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'कोणार्क' नाटक के आधार पर महामात्य चालुक्य का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये :
   (i) भारतेन्दु का नाट्य-साहित्य को योगदान
   (ii) हिंदी एकांकी का क्रमिक विकास
   (iii) हिंदी गीति-नाट्य का विकास
   (iv) हिंदी एकांकी विधा के भेदों एवं उपभेदों का वर्गीकरण (2×7½=15)

http://www.uoronline.com
http://www.uoronline.com

http://www.uoronline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

http://www.uoronline.com